PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

मई 2006 ISSUE 0506 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

हमारा ईश्वर एक जीवन्त, समर्थ और दयालु ईश्वर है!

मूसा की ईश्वर से भेंट :

एक बार मूसा को होरेब पर्वत पर जलती पर न भस्म होने वाली एक झाड़ी में से प्रभु की वाणी सुनाई पड़ी "मूसा!मूसा!" उसने कहा, "प्रस्तुत हूँ।" ईश्वर ने कहा "पास मत आओ। पैरों से जूते उतार दो, क्योंकि तुम जहाँ खड़े हो, वह पवित्र भूमि है।" ईश्वर ने फिर उसे कहा, "मैं इब्राहीम, इसहाक तथा याकूब का ईश्वर हूँ। "इस पर मूसा ने अपना मुख ढक लिया कहीं ऐसा न हो कि वह ईश्वर को देख ले। [यह इसलिए क्योंकि ईश्वर ने कहा था कि यदि कोई मनुष्य मुझे देख लेगा, तो वह जीवित नहीं रह सकेगा। **(निर्गमन 33:29)**]

प्रभु ने जब इस्राएलियों की मुक्ति (दासता से) के लिए मूसा को भेजने की बात कही तो मूसा घबरा गया। पर ईश्वर ने उसके साथ रहने का वादा किया और इस्राएलियों से मूसा को यह कहने को कहा, "प्रभु तुम्हारे पूर्वजों के ईश्वर, इब्राहीम, इसहाक तथा याकूब के ईश्वर ने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है। यह सदा के लिए मेरा नाम रहेगा और यही नाम लेकर सब पीढ़ियाँ मुझसे प्रार्थना करेंगी।" **(पढ़ें निर्गमन 3:4-18)**

दस आज्ञाँए :

बाद में मिस्त्रियों से विभिन्न चमत्कारों तथा अद्भुत विपत्तियों द्वारा मूसा की अगुवाई में ईश्वर ने इस्राएलियों को दासता से छुडा लिया और सीनई पर्वत पर दस आज्ञाँए दे दीं तथा विभिन्न नियम बतला दिये **(निर्गमन21-31)**। मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा और तब तक लोगों ने हारुन के नेत त्व में अपने लिए घातु का बछड़ा बना कर उसे दण्डवत् किया तथा उसे बलि चढ़ा कर अपना देवता मानने लगे। प्रभु को इस्राएलियों पर क्रोध आया पर मूसा ने विनम्र प्रार्थना कर प्रभु का क्रोध शान्त कर दिया। लेकिन लोगों का कोलाहल नाच–गाना देख मूसा भी क्रोधित हो गया और उसने विधान की दो पाटियों को पहाड़ के निचले भाग पर पटक कर टुकड़े–टुकडे कर दिये।**(निर्गमन32)** बाद में मूसा के निवेदन पर ईश्वर ने अपनी सम्पूर्ण महिमा मूसा को दिखाई तथा उस पर अपना "प्रभु" नाम प्रकट किया। **(निर्गमन 33:18-23; 34:5-7)** मूसा ने प्रभु को चेहरा नहीं देखा, पर उसके सामने से निकलने के बाद प्रभु को पीछे से ही देख सका।**(निर्गमन33:20-23)**

प्रभु ने उसके सामने से निकल कर कहा "प्रभु; प्रभु एक **करुणामय** तथा **क पालु** ईश्वर है। वह**देर से क्रोध करता** और**अनुकम्पा**तथा **सत्यप्रतिज्ञता** का धनी है। वह **हज़ार पीढ़ियों** तक अपनी **कपा** बनाये रखता और **बुराई, अपराध** और **पाप क्षमा** करता है। **(निर्गमन 34:6)**सीनई पर्वत पर प्रभु बादल के रुप में उतर कर मूसा के पास आया, मूसा को विधान की दो नई पाटियों पर फिर से वही दस आज्ञाँए दी और इस्राएलियों के साथ एक विधान निर्धारित किया और मूसा ने विधान के शब्द पाटियों पर अंकित किये। बिना कुछ खाये या पानी पिये मूसा प्रभु के साथ फिर से चालीस दिन और चालीस रात रहा। ईश्वर से बातें करने के फलस्वरुप मूसा का मुखमण्डल देदीप्यमान हो गया। **(निर्गमन 34:5, 28-29; विधि-विवरण 9:9,18)**

इस तरह हम देखते हैं कि कैसे मूसा, जो सब मनुष्यों में सबसे अधिक विनम्र था,**(गणना 12:3)** को ईश्वर ने चुना और अपना क पापात्र बनाया। **(निर्गमन 33:17)** उसके द्वारा इतिहास के सबसे महान् चमत्कार दिखाये और उसकी अगुवाई में 6 लाख इस्राएलियों (पुरुषों की संख्या) को लाल सागर पार करवाकर 40 वर्ष तक उन्हें संभाला, उसकी सभी मध्यस्थ प्रार्थनाँए स्वीकार की **(विधि विवरण9:11, 18, 25)** उसपर अपनी सम्पूर्ण महिमा प्रकट कर अपना "प्रभु" नाम प्रकट किया।

पवित्र जपमाला की रानी से एक लघु प्रार्थना

हे पवित्र जपमाला की रानी! तूने फातिमा में गडेरियों के तीन बच्चों पर पवित्र माला के छिपे रहस्यों को प्रकट कर समझाया। इन रक्षादायक रहस्यों में हम तेरे प्रिय पुत्र प्रभु येशु के जन्म, जीवन, दुःखभोग, पुनरुथान और स्वर्गारोहण पर तेरे साथ मनन–चिन्तन करते हैं। हम बच्चों पर दया द ष्टि बनाये रख कि हम प्रतिदिन तेरी और तेरे पुत्र के साथ भक्ति और श्रद्धा से, प्रेम और विश्वास के साथ प्रतिदिन अपने जीवन द्वारा–मन, वचन व कर्म द्वारा, प्रार्थना द्वारा जुड़े रह सकें, हर पैशाचिक शक्ति व प्रलोभन पर विजय प्राप्त कर सकें, तथा अन्त में तेरे पुत्र की महिमा में प्रवेश कर सकें। इन सब निवेदनों के लिए हे अति निर्मल, निष्कलंक, त्राणकर्ता की माँ, अपने पुत्र से हमारे लिए निरन्तर मध्यस्थ करना। आमेन।

प्रथम आज्ञा-मैं प्रभु, तुम्हारा एकमात्र ईश्वर हूँ।

प्रभु ने मूसा को सीनई पर्वत पर दो पाटियों पर दस आज्ञाँए अपने हाथ से लिखकर दीं थी। **(निर्गमन 31:18)** ईश्वर ने पहली आज्ञा यह दी। "मैं प्रभु तुम्हारा ईश्वर हूँ"...मेरे सिवा तुम्हारा कोई ईश्वर नहीं होगा। अपने लिए कोई देवमूर्ति मत बनाओ। ऊपर आकाश में या नीचे प थ्वीतल पर, या प थ्वी के नीचे के जल में रहने वाले किसी भी प्राणी अथवा वस्तु की मुर्ति मत बनाओ। उन मूर्तियों को दण्डवत् करके उनकी पूजा मत करो, क्योंकि मैं प्रभु तुम्हारा ईश्वर ऐसी बातें सहन नहीं करता। इस द ष्टि से वह असहिष्णु है। जो मुझ से बैर करते हैं, मैं तीसरी और

*चौथी पीढ़ी तक उनकी स्तुति को उनके अपराधों का दण्ड देता हूँ। जो मुझे प्यार करते है और मेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं, मैं हज़ार पीढ़ियों तक उन पर दया करता हूँ।" **(निर्गमन 20:2-6; विधि-विवरण 5:6-9)** इस तरह प्रभु–ईश्वर ने अपने लोगों के साथ अपना विधान ठहराया और यह समझाया कि "इस्राएल! सुनो! हमारा प्रभु–ईश्वर एकमात्र प्रभु है। तुम अपने प्रभु–ईश्वर को अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा और अपनी सारी शक्ति से प्यार करो।" **(विधि-विवरण 6:4-5)***

*अतः हम जान गये कि ईश्वर को साक्षात् रुप में न तो किसी ने देखा है, **(1योहन 4:12)** उसकी महिमा, शक्ति, प्रेम, दया और ज्ञान की कोई सीमा नहीं, वह म तकों का नहीं जीवितों का ईश्वर है **(मारकुस 12:27)** जैसे प्रभु येशु ने, उसके इकलौते पुत्र ने, कहा क्योंकि वही स्वर्ग से, अपने पिता की ओर से, उतरा है और उसने पिता को देखा व प्रकट किया है–अपने वचनों, शिक्षाओं तथा कार्यों द्वारा। पिता को पूर्ण रुप से सिर्फ पुत्र येशु ही जानता है जो स्वंय म तकों में से जी उठकर पिता के दायें सिहांसन पर विराजमान है। हमें ईश्वर का पूर्ण ज्ञान नहीं है, जैसे सन्त पौलुस लिखते हैं–"अभी तो हमें आईने में धुँधला–सा दिखाई देता है, परन्तु तब हम आमने सामने देखेंगे । अभी तो मेरा ज्ञान अपूर्ण है; परन्तु तब मैं उसी तरह पूर्ण रुप से जान जाऊँगा, जिस तरह ईश्वर मुझे जान गया है।" **(1 कुरिन्थियों 13:12)***

*आईये, हम उस जीवन्त ईश्वर की स्तुति व आराधना करें जो आज भी हमारे मध्य **जीवन-धाम** में अपने पवित्र वचनों की शक्ति द्वारा अनेक अदभुत चमत्कार दिखा रहा व अपने विश्वासियों को प्रेम का कारण हर रोग, पाप व त्र टि से मुक्ति, तथा हर सकंट व बुराई से बचाता है।*

सच्चे ईश्वर को पहचानें, उसकी सेवा और आराधना करें

चार प्रमुख नबियों में दूसरे, नबी यिरमियाह को प्रभु ने अल्पायु में ही भविष्यवाणी की प्ररेणा प्रदान कर दी क्योंकि उनके समय में लोगों ने प्रत्येक रुप से इस्रासलियों ने, सच्चे ईश्वर की आराधना न करते हुए मूर्तिपूजा को महत्त्व दिया और ईश्वर के दिये प्रथम नियम को भंग किया जिसके प्रति ईश्वर असहनशील था। तब ईश्वर ने अपने सामर्थ्य व महिमा की तुलना निरर्थक, असमर्थ व निर्जीव मूर्तियों से कर के लोगों को यह समझाया कि सही मार्ग क्या है, सच्चा ईश्वर कौन है और कैसे मूर्तिपूजा व्यर्थ है। प्रस्तुत है नबी यिरमियाह के ग्रन्थ का एक अंश **(अध्याय 10:1-16):**

प्रभु और देवमूर्तियाँ :

"इस्राएलियों! अपने प्रति ईश्वर की वाणी सुनो। प्रभु यह कहता है, "राष्ट्रों का आचरण मत सीखो और आकाश के उन चिन्हों से मत डरो, जिन से वे लोग घबराते हैं। उन लोगों के रिवाज व्यर्थ है। वे जंगल का कोई व क्ष काट डालते हैं और शिल्पकार उसे छेनी से गढ़ता है। वे उस पर सोना एवं चाँदी मढ़ते हैं और हथौड़े से कीलें ठोक कर उसे बैठाते हैं, जिससे वह हिले नहीं। उनकी मूर्तियाँ ककड़ी के खेत में फूस के पुतले–जैसी है। वे न बोल सकती और न चल सकती, इसलिए उन्हें उठा कर ले जाना पड़ता है। उन से मत डरो। वे न तो कोई हानि कर सकती हैं और न कोई लाभ पहुँचा सकती है।" प्रभु! तुझ–जैसा कोई नहीं है। तू महान् है और तेरा नाम शक्तिमान् है। राष्ट्रों के अधिपति! किसे तुझ पर श्रद्धा नहीं रखनी चाहिए? तू इसके योग्य है। राष्ट्रों के सब ज्ञानियों में और उनके सब राज्यों में तेरे समान कोई भी नहीं! वे सभी नासमझ और मूर्ख हैं। लकड़ी की मूर्तियाँ उन्हें कौन सी शिक्षा दे सकती हैं ? उन पर तरशीश से लायी हुई चाँदी और अफ़ाज का सोना मढ़ दिया गया है। कारीगर और सोनार की क तियों पर नीले और बैंगनी वस्त्र पहनाये गये हैं। यह सब निपुण कलाकारों द्वारा निर्मित है। किन्तु प्रभु ही **सच्चा ईश्वर है।** वही **जीवन्त ईश्वर और शाश्वत राजा है।** उसके क्रोध पर धरती ड़ोलने लगती है। उसके कोप के सामने राष्ट्र नही टिक सकते। "तुम उन से यह कहो : जिन देवताओं ने स्वर्ग और प थ्वी नहीं बनायी, वे प थ्वी पर से और आकाश के नीचे से मिट जायेंगे।"

ईश्वर की महिमा :

ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से प थ्वी बनायी। उसने अपनी प्रज्ञा से संसार को उत्पन्न किया और अपने विवेक से आकाश फैलाया। जब वह गरजता है, तो आकाश से मूसलाधार वर्षा होती है। वह प थ्वी के सीमान्तों से बादल बुलाता है। वह वर्षा के साथ बिजली चमकाता और अपने भण्ड़ारों से पवन बहाता है। मनुष्य चकित रह जाते और समझ नहीं पाते हैं। सोनार अपनी मूर्ति पर लज्जित है, उसकी मूर्तियाँ मिथ्या है। उन में प्राण नहीं हैं। वे असार हैं और उपहास के पात्र हैं। दण्ड का समय अपने पर वे नष्ट हो जायेंगी। किन्तु याकूब का ईश्वर ऐसा नहीं है। वह सभी वस्तुओं की स ष्टि करता है। और इस्राएल उसकी अपनी विरासत है। उसका नाम सर्वशक्तिमान प्रभु है।"

इसलिए हम सभी उस ईश्वर की आराधना करें, जो हमारा स ष्टिकर्ता और पालनकर्ता है, जो सर्वशक्तिमान है, शाश्वत, सर्वज्ञानी और सर्वव्यापी है। केवल वही आराधना और स्तुति के योग्य है, कोई मनुष्य या मूर्ति नहीं जो स ष्टिकर्ता की स ष्टि है या ईश्वर की स ष्टि की स ष्टि है।

मेरा सच्चा परामर्शदाता कौन है ?

इस संसार में लाखों लोग (अरबों की आबादी में) अपने आप को भीड़ में अकेला पाते हैं, कई लोग भीड़ से ड़रते हैं और कई लोग अकेलेपन से घबरातें व ड़रते है। पर क्या कोई इस सत्य से भाग सकता है कि वह अपने बल पर सब कुछ नहीं कर सकता, केवल अपने ज्ञान से वह सब कुछ सही ढंग से कर नहीं सकता और बिना किसी से संपर्क बनाये पूरा जीवन काट नहीं सकता, क्योंकि वह स्वंय अपूर्ण है, वह कमजोर है, अज्ञानी है और काल व स्थान की सीमाओं को वह लांघ नहीं सकता। वह सर्वोच्च परमेश्वर की अनोखी स ष्टि है जिसमें ईश्वर का प्रतिरुप है। उसके पास ईश्वर के द्वारा दी एक आत्मा है और मिट्टी से गढ़ा एक शरीर है जो नश्वर है और मरने पर मिट्टी में मिल जायेगा। वह अमर नहीं हो सकता क्योंकि वह पापी है और इस संसार में रहकर वह प्रलोभन व परीक्षा में पड़कर पाप कर बैठता है जिसका वेतन म त्यु है। पर वह इस संसार में रहकर केवल ईश्वर की क पा से सब कुछ कर पायेगा। वह उसकी क पा द्वारा अपनी आत्मा को नष्ट होने से बचा सकता है। वह ईश्वर ही है जो उसका स ष्टिकर्ता है, पालनकर्ता है, और उद्धारकर्ता है। उसका प्रेम व उसकी दया एक धर्मी की आत्मा को बचाने का कार्य सम्पन्न करती है, उसकी हर पल रक्षा करती है। इन तथ्यों से कई लोग वाकिफ नहीं हैं इसलिए वे और अधिक अकेले और निस्सहाय पड़ जाते हैं जब वे दूसरों से सदा सहायता की भीख माँगते हैं, उनमें प्रेम व सम्मान पाने की आशा करते हैं और अपने कार्यों की सफलता व पूर्ति के लिए दूसरों से परामर्श माँगते हैं, पर ईश्वर से नहीं। ऐसे लोगों को (स्वंय सब दूसरों से) निराशा भी जल्द ही हाथ लगती है। अन्त में वह स्वंय पर भी भरोसा नहीं रख पाते, अपना आत्म विश्वास भी खो बैठते हैं। इसलिए मनुष्य के जीवन में एक मागदर्शक या गाईड़ की ज़रुरत है, एक गुरु की ज़रुरत

"एक कुँवारी गर्भवती है। वह एक पुत्र को प्रसव करेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।" (इसायाह 7:14)

है, ठीक वैसे ही जैसे अन्धे को सड़क पार करने के लिए साधारण सज्जन की ज़रुरत है जो उसका हाथ पकड़ कर उसे सड़क के उस पार पहुँचा दे। इस विषय में पवित्र बाईबिल से हमें उत्तर मिलता है कि हम (इस संसार में) किससे और किस विषय में परामर्श लें तथा हमारा सच्चा परामर्शदाता कौन है। आईये,पढ़ें हम**प्रवक्ता ग्रन्थ37:7-19: "कपटी व्यक्ति से सलाह मत लो। और ईर्ष्यालु से अपनी योजना छिपाओ। प्रत्येक परामर्शदाता अपनी सम्पति अच्छी समझता है, किन्तु कुछ लोग अपने हित में परामर्श देते हैं। परार्मशदाता से सावधान रहो और पहले पता करो कि उसका स्वार्थ किसमें है, क्योंकि वह अपने हित में परामर्श देगा और तुम से लाभ उठाने के विचार से कहेगा: "आप सही मार्ग पर चलते हैं", किन्तु किनारे से देखता है कि तुम को क्या होगा। जो तुम से बैर रखता, उस से सलाह मत माँगो और ईष्यालु व्यक्ति से अपनी योजना छिपाओ। तुम न तो स्त्री से उसकी सौत के विषय में सलाह माँगो और न कायर से युद्ध के विषय में, न व्यापारी से सौदे के विषय में, न खरीददार से बिक्री के विषय में न विद्वेषी से क तज्ञता के विषय में, न विधर्मी से भक्ति के विषय में, न बेईमान से ईमानदारी के विषय में, न आलसी से किसी काम के विषय में, न ठेके के मज़दूर से किसी काम की समाप्ति के विषय में और न आलसी नौकर से कठिन काम के विषय में। इन लोगों के किसी परामर्श पर निर्भर मत रहो, किन्तु धार्मिक व्यक्ति की संगति करो, जिसके विषय मे तुम जानते हो कि वह आज्ञाओं का पालन करता है, जिसका स्वभाव तुम्हारे स्वभाव से मेल खाता है और जब तुम लड़खड़ाते हो, तो वह तुम से सहानुभूति रखेगा। अपने अन्तःकरण पर भी ध यान दो, क्योकि वह तुम्हारे प्रति किसी से भी अधिक ईमानदार है। ऊँची मीनार पर बैठने वाले पहरेदारों से भी अधिक मनुष्य को अधिक जानकारी अन्तःकरण देता है। सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि तुम सर्वोच्च प्रभु से प्रार्थना करो, जिससे वह तुम को सत्य के मार्ग पर ले चले।**

इस तरह हम जान गये कि हम अपने स ष्टिकर्ता, अपने पिता परमेश्वर से, जिसकी दया व प्रेम से हम जीवित हैं, प्रार्थना के द्वारा सही परामर्श प्राप्त कर सकते हैं–सही मार्गदर्शन, ज्ञान एवं विवेक प्राप्त कर सकते हैं। पिता परमेश्वर व उनके पुत्र प्रभु येशु से विसर्जित पवित्र आत्मा, जो हमारा सहायक, मार्गदर्शक, सच्चा साक्षी देने वाला तथा पाप धार्मिकता और दण्डाज्ञा के विषय में संसार का भ्रम प्रमाणित करने वाला है **(योहन 16:18-10)** को हम प्राप्त करें। उसके लिए प्यासे बनें। ईश्वर के पवित्र आत्मा को प्राप्त कर हम पूरे संसार की परख कर सकते हैं। जो प्रत्यक्ष हो या छिपा हुआ हो, सब कुछ का ज्ञान हमें ईश्वर का पवित्र आत्मा, जो शन्ति, विनम्रता, प्रेम, न्याय व आनन्द का आत्मा है, करा देगा तथा हमें भविष्य में आने वाले संकट व कठिनाई से, दुर्घटना से, प्रलोभन से सचेत कर देगा और बचायेगा। इस लिए हम यह विश्वास करें कि–

"आध्यात्मिक मनुष्य सब बातों की परख करता है, किन्तु कोई भी उस मनुष्य की परख नहीं कर पाता, क्योंकि (लिखा है)- प्रभु का मन कौन जानता है ? कौन उसे शिक्षा दे सकता है ?(1 कुरिन्थियों2:15-16)

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

टूटी हड्डियों में चलने की शक्ति मिली

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा। मैं, ऊषा फ्रांसिस,जब 14 साल की थी, तब घर में सफाई करते–करते एक टिन के ऊपर गिर गई जिससे मेरे जाँघ की हड्डी टूट गई। मुझे पहले निकटतम अस्पताल में ले जाया गया जहाँ हड्डी के टूटे होने का पता चला। आर्मी हस्पताल में फिर हड्डी जोड़ने के लिए घातु की प्लेटें लगाई गई। एक साल के बाद, जाकर मैं ठीक हो पाई। इस वर्ष, 34 साल बाद एक दिन जब मैं खाना पका रही थी तो पैरों में बहुत दर्द होने लगा और मैं एक जगह बैठ गई। दर्द बहुत अधिक बढ़ने पर सफ्दरजंग अस्पताल में दिखाया जहाँ पर जाँच करके पता चला कि मेरे पैर मे लगाई प्लेटें गल चुकी हैं और उसे ऑपरेशन द्वारा बदलने की आवश्यकता है। ऑपरेशन के लिए डॉक्टर ने करीब डेढ़ लाख रुपये मांगे जो मैं दे नहीं सकती थी। वहाँ से मैं चली आई। सन्त स्टीफन्स अस्पताल में दिखाया तो उन्होंने कुछ दवायें दीं और कुछ अभ्यास करने को कहा। पर इस से मेरे दर्द में कोई आराम न मिला। मैं कोई भी काम खडे होकर नहीं कर सकती थी, न ही नीचे जमीन पर बैठ सकती थी, और न तो कही चल सकती थी। सभी इलाज निष्फल रहे।

एक दिन जब मैं पैर पर हाथ रखकर सब्जी खरीदने बाहर निकली तो मेरी पड़ोसन ने मुझे, मेरी हालत देख, **जीवन-धाम** के बारे में बताया और इतवार को अपने साथ चलने को कहा। पहले इतवार मैं पैर पर हाथ रख कर बड़ी मुश्किल से चल कर यहाँ आई और बैंच पर बैठ गई। उसी दिन प्रभु येशु ने मेरी प्रार्थना सुन ली मेरा दर्द कम हो गया और मैं बिना पैर पर हाथ रख कर चल कर गई। अगले इतवार और आराम मिला। अब मेरे पैरों में बिल्कुल दर्द नहीं है और अब मैं सीधा चल लेती हूँ, घर के काम कर लेती हूँ व नीचे बैठ सकती हूँ। इस अमूल्य क पा के लिए प्रभु येशु को स्तुति व धन्यवाद।

"जिसने स्वर्ग और प थ्वी को बनाया है वही प्रभु मेरी सहायता करता है। वह तुम्हारा पैर फिसलने न दे।(स्तोत्र121:2-3)

ऊषा फ्रासिंस, दिल्ली

जीवन-धाम, फरीदाबाद कैसे पहुँचें
(प्रार्थना का समय : हर इतवार 9:30 से 1:00 बजे तक)

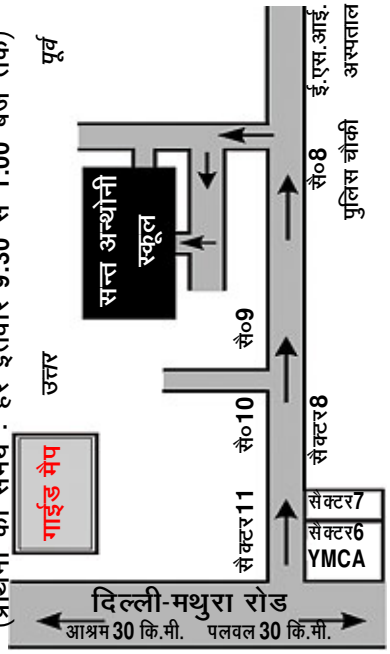

6-मासीय/ 181-दिवसीय "नया-नियम" पाठ्य क्रम

पिछले माह हमने आपको अप्रैल माह का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया था। अब प्रस्तुत है **मई के महीने का पाठ्यक्रम:**

तारीख	वचन	तारीख	वचन	तारीख	वचन
1	2 कुरिन्थियों1-2	12	एफेसियों4-5	23	1 तिमथी4-5
2	2 कुरिन्थियों3-4	13	एफेसियों6 /फिलि1	24	1 तिमथी6/2 तिमथी1
3	2 कुरिन्थियों5-6	14	फिलिप्पियों2-3	25	2 तिमथी2-3
4	2 कुरिन्थियों7-8	15	फिलि4 /कलोसि1	26	2 तिमथी4/तीतुस1
5	2 कुरिन्थियों9-10	16	कलोसियों2-3	27	तीतुस2-3
6	2 कुरिन्थियों11-12	17	कलोसि4 / 1 थेसल1	28	फिलेमोन
7	2 कुरि13/गलातियों1	18	1 थेसलनीकियों2-3	29	इब्रानियों1-2
8	गलातियों2-3	19	1 थेसलनीकियों4-5	30	इब्रानियों3-4
9	गलातियों4-5	20	2 थेसल1-2	31	इब्रानियों5-6
10	गलातियो6/एफेसि1	21	2 थेसल3/1 तिमथी1	जून01	इब्रानियों7-8
11	एफेसियों2-3	22	1 तिमथी2-3	02	इब्रानियों9-10

प्रभु कहता है, "मैं तुम्हारे लिए निर्धारित अपनी योजनाँए जानता हूँ, तुम्हारे हित की योजनाँए, अहित की नहीं, तुम्हारे लिए आशामय भविष्य की योजनाँए।"(यिरमि. 29:11)

इन सभी को ईश्वर ने चलने की शक्ति दी, पैरों की बीमारी से मुक्ति दी

गुर्दे की पत्थरी वचन की शक्ति से गायब हुई

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा। मैं, राम विलास (उम्र–35 वर्ष), पिछले 4 महीने से दर्द के मारे बेहाल था। अचानक काम करके घर आने पर एक शाम पेट के नीचे दर्द उठा और मुझे पास के डिसपेन्सरी में जाना पड़ा। दर्द की दवा खाने से कोई आराम नहीं मिला। तब डॉक्टर ने अल्ट्रासाऊँड करवाने की सलाह दी। रिपोर्ट से पता चला कि मेरे दायें गुर्दे मे दो व बायें में एक पत्थरी है (8mm, 7mm और 5 mm की) पत्थरी की दवा 15 दिन तक खाई पर कोई फायदा नहीं हुआ।

तब मेरी पत्नी ने मेरी हालत देखकर मुझे यहाँ **जीवन-धाम** में प्रार्थना में शामिल होने को कहा। तीन हफ्ते पहले वह मुझे यहाँ ले आई और मुझे प्रभु पर विश्वास दिलाया। हम रोज सुबह–शाम प्रभु से घर पर प्रार्थना करने लगे। डॉक्टर ने ऑपरेशन द्वारा पत्थरी निकालने की बात कही थी। पर मैं आपरेशन से घबराता था। प्रभु की दया से 20 दिन के अन्दर ही मेरी दो पत्थरी अपने आप निकल गई। जिसका मुझे पता भी नहीं चला। अब सिर्फ बायें गुर्दे में एक पत्थरी बाकी थी। पिछले हफ्ते पेशाब करने में तकलीफ बढ़ने पर मैंने प्रार्थना की और कुछ ही देर में जोर लगाने पर वह पत्थरी भी मूत्र द्वार से बाहर निकल गई आई। अब मुझे कोई दर्द नहीं है प्रभु की स्तुति हो, महिमा हो।**राम विलास**, फरीदाबाद

"मैं जीवन भर उसका नाम लेता रहूँगा, क्योंकि उसने मेरी दुहाई पर ध्यान दिया।" (स्त्रोत 116:2)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

5) मारकुस रचित सुसमाचार h) अध्याय 13-16

प्रस्तुत प्रश्न सन्त मारकुस के सुसमाचार के अध्याय **13 से 16** तक से बनाये गये हैं जिनके सही उत्तरों को आप ने दिये गये उत्तरों से (क, ख, ग और घ) चुनकर हमें लिख भेजना है। कुछ प्रश्नों के एक से भी ज्यादा सही उत्तर हो सकते हैं। साथ ही सही उत्तर देने वाली वाक्याशों की भी संख्या अध्याय सहित बतायें।

1) किसने यह कहा, "निश्चय ही यह मनुष्य ईश्वर का पुत्र था?"
क) शतपति ने ख) पेत्रुस ने, ग) महायाजक ने, घ) पिलातुस ने

2) सकंट के उन दिनों मे किनके लिए शोक मनायें ?
क) जो खेत में हो, ख) जो घर पर हो, ग) जो पहाड़ पर हो, घ) जो गर्भवती हो

3) प्रभु येशु ने शिष्यों के साथ कहाँ भजन गाये थे?
क) बारी में, ख) अतिथिशाला में, ग) मन्दिर में, घ) पहाड पर

4) प्रभु पर विश्वास करने वाले क्या–क्या करेंगे ?
क) जोर से रोयेंगे व दाँत पीसेंगे, ख) अपदूतों के साथ घूमेंगे, ग) नवीन भाषाँए बोलेंगे, घ) रोगियों को स्वस्थ करेंगे

5) विपत्तियों का आरम्भ किन से होगा ?
क) युद्ध, ख) महामारी, ग) अकाल, घ) भूकम्प

6) यह किसने पूछा था, "क्या तुम मसीह परमस्तुत्य के पुत्र हो?"
क) चोर ने, ख) सैनिको ने,
ग) पिलातुस ने, घ) प्रधानयाजक ने

7) मानव पुत्र के पुनरागमन का समय कौन जानता है? क) पिता, ख) पुत्र, ग) स्वर्गदूत, घ) नबी

8) प्रभु येशु की म त्यु किस दिन और किस पहर हुई? क) शुक्रवार तीसरे पहर, ख) शनिवार पहले पहर, ग) शुक्रवार दूसरे पहर, घ) इतवार चौथे पहर

5) मारकुस रचित सुसमाचार g) अध्याय 10-12

1) कैसर, कर, दें।(12:14)- फरीसियों और हरोदियों ने येशु से कहा।
2) राज्य, अपने, बैठने, दायें, बायें।(10:37)- ज़ेबेदी के पुत्र याकूब और योहन ने येशु से कहा।
3) गुरुवर, अंजीर, शाप(11:21)- पेत्रुस ने येशु से कहा।
4) म तकों, जीवितों, लोगों(12:27)- प्रभु येशु ने सदूकियों से कहा।
5) उत्तराधिकरी, मार, विरासत (12:7)- असामियों ने आपस में कहा।
6) पत्नी, परित्याग, पुरुष(10:2)- फरीसियों ने येशु से कहा।
7) बछेड़ा, खोलते (11:5)- लोगों ने दो शिष्यों से कहा।
8) लोग, मसीह, दाऊद (12:35)- येशु ने विशाल जनसमूह से कहा।

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं?
क्या आप दु:खी व रोगी.....हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है ?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद (सैक्टर-8, पुलिस थाने के निकट) में हर रविवार प्रात:9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"जो यह स्वीकार करता है कि येशु ईश्वर के पुत्र हैं, ईश्वर उसमें निवास करता है और वह ईश्वर में।"(1 योहन 4:15)

Edited & Published by JEEVAN DHAM, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.